

# आज का पुरुषार्थ 2 August 2022

Source: BK Suraj bhai

Website: [www.shivbabas.org](http://www.shivbabas.org)

धारणा – “ अब समय की नाजुकता को पहचानते हुए अपनी तपस्या की रफ्तार को तेज करना .. यही प्रतिज्ञा की अब आवश्यकता है ”

हम सभी की **तपस्या** इस संसार को **पावन** करती है। बाबा ने आकर यह महान **यज्ञ** रचा है।

हम सबकी **तपस्या** के द्वारा यह यज्ञ सफल होता है। और इससे विनाश की ज्वाला भी प्रगट होती है। **जिससे यह तमोप्रधान दुनिया नष्ट होती है।**

कोई सोच सकता है कि इतना खराब काम क्यों होता है योग तपस्या से? यह खराब काम नहीं, अच्छा काम है इस **प्रकृति** के लिए, इस **संसार** के लिए।

क्योंकि अगर प्रकृति को **purify** न किया जाये तो प्रकृति स्वतः ही इस संसार को नष्ट कर देगी। जैसे अब कर रही है कोरोना के द्वारा।

इस समय पाप बहुत बढ़ चुका है पापियों की संख्या भी बहुत ज्यादा है।  
**पुण्य आत्मायें गिनी चुनी रह गई है।** इसलिए संसार की समाप्ति होनी ही चाहिए।

और **काल चक्र का नियम** भी ऐसा ही है कि .. रात पूरी हो रही है। दिन का उदय होगा ही। तो हम सभी अपने त्याग के बल से तपस्या की ओर चले।

यह तपस्या है .. **आत्म अभिमानी** होने की। स्थिर बुद्धि होने की तपस्या है यह। बुद्धि को स्थिर करना यह भी बहुत बड़ी तपस्या है।

आत्मिक दृष्टि की अर्थात् प्युरीटी की भी हमारी बहुत जबरदस्त तपस्या है। और बाबा से **योगयुक्त** रहना तो सबसे बड़ी तपस्या है।

उसकी आधारशिला है यह स्वमान, ज्ञान का चिन्तन। मुरली का अध्ययन करके उसे जीवन में समाना।

तो सभी तपस्वियों को अब समय की नाजुकता को पहचानते हुए अपनी तपस्या की रफतार को तेज करनी है।

सभी साथ साथ भी तपस्या कर सकते है। या एक एक सबजेक्ट भी ले सकते है। एक के साथ दुसरा जैसे ... **आत्मिक दृष्टि** का अभ्यास करना है।

तो पन्द्रह दिन के लिए या हफ़्ते के लिए धुन लगा दे ..

**" सबके मस्तक के मध्य में चमक रहे है ज्योति "**

और ..

**" मैं निराकार आत्मा हूँ "**

बस यह दो अभ्यास ले ले। सौ बार बार कर जाये, **घन्टे में पांच सात बार कर ले।** तो बहुत अच्छी **अनुभूति** एक ही दिन में प्राप्त हो जायेगी।

लेकिन यह जरूरी होता है कि जो अभ्यास हमें करना है ... रोज सवेरे उठकर उसको revise करें उस प्रतिज्ञा को दोहराये।

सवेरे ही वह अभ्यास अच्छी तरह कर ले ताकि सारा दिन उसकी आधारशिला मजबूत रहे।

इस तरह **स्वमान** ले ले। इसी तरह **बाबा की स्वरूप पर स्थिरता**, जिससे हमारे अनेक व्यर्थ संकल्प स्वतः ही समाप्त हो जायेंगे।

और **बाबा की सम्पूर्ण एनर्जी सम्पूर्ण शक्तियाँ हमें प्राप्त होने लगेंगे।**  
उनके डिवाइन स्वरूप देखते हुए अपने मन में सुन्दर विज्ञान बनाये ..

*" कैसा है शिवबाबा ? उनका स्वरूप कैसा है ? उनकी महाज्योती डिवाइन एनर्जी दूर दूर तक फैल रही है... "*

**उनके स्वरूप पर हम स्थित हो जाये।** कुछ देर उनके पास बैठ जाये।

तो बहुत अच्छा **अभ्यास** करेंगे .. तपस्या रंग लायेगी, तपस्या दुःखियों के दुःख दूर करेगी। हमारी तपस्या सभी के सुखों की मार्ग खोलेगी। हमारी तपस्या सभी को समस्याओं से मुक्त करेगी।

**अपने आत्मिक स्वरूप को देखें ...**

*" मैं चमकती हुई मणि .. मस्तक सिंहासन पर विराजमान हूँ .. मुझसे चारों ओर प्रकाश फैल रहा है "*

अपने अंदर झाँके। अपने अंदर की शान्ति और शक्ति से मिले, उन्हें पहचाने  
" मेरे अंदर गहन शान्ति है .. मेरे पास असीम शक्ति है .. ईश्वरीय शक्ति  
है .. उनके किरणों चारों ओर फैल रही है "

और मेरे चारों ओर एक **powerful aura** है, आभामंडल है। अब इस  
आभामंडल के साथ ही हम चले ऊपर की ओर ...

**" आत्मा बनकर बैठ जाये परमधाम में सुप्रीम बाबा के साथ "**

और enjoy करे उनकी कम्पनी और रिसीव करे उनकी **divine energy**

॥ ओम शान्ति ॥

**BK Google:** [www.bkgoogle.org](http://www.bkgoogle.org)

**Website:** [www.shivbabas.org](http://www.shivbabas.org)